खेतों में न जलायें फसल अवशेष, घटती है उर्वरा शक्ति

❑ फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत प्रक्षेत्र दिवस एवं किसान गोष्ठी का आयोजन

कानपुर, 3 मार्च। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर द्वारा आज ग्राम, गजा निवादा,विकासखंड मैथा में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि चंद्र प्रकाश मिश्रा ने कहा कि किसान भाई फसलों के अवशेषों को आग लगाने न लगाएं, क्योंकि आग लगाने से मिट्टी में नमी की कमी एवं मृदा तापमान में बढ़ोतरी होती है। जिससे खेत की उर्वरा शक्ति कम होने के साथ-साथ मृदा की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत प्रभाव पड़ता है साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से होने वाले दुष्परिणामों का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ रहा है। मिश्रा ने कृषकों से फसल अवशेषों में आग न लगाने की अपील की और कहा कि इसे खेतों में सड़ाकर खाद बनाएं जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति पड़ेगी। केंद्र की गृह वैज्ञानिक डॉ. निमिषा अवस्थी ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि किसान साथियों फसल में अवशेषों का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं। जिससे विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं उन्होंने कहा फसल के अवशेषों पर मशरूम की गुणवत्ता युक्त खेती की जा सकती है। केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने कहा कि किसान भाई अपनी फसल की सुरक्षा हेतु अपने घर पर ही नीमास्त्र व दशपर्णी का निर्माण करें तथा फसल अवशेषों को मल्चिंग के रूप में प्रयोग करें। फसल अवशेष प्रबंधन योजना के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि रोटावेटर, सुपर सीडर,हैप्पी सीडर तथा मलचर आदि कृषि यंत्रों के प्रयोग से फसल अवशेषों को खेतों में दवा देने से गेहूं की फसल अज्छी होती है। इस अवसर पर खेत में किसानों को गेहूं की फसल भी दिखाई गई, सभी किसान गेहूं फसल देखकर सहमत हुए कि अब वे फसल अवशेषों में आग नहीं लगाएंगे, इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम के प्रगतिशील किसान आनंद स्वरूप दुबे ने की। इस कार्यक्रम में ग्राम के प्रगतिसील किसान रामआसरे,अनुज कुमार रघुराज सिंह एवं राघवजी सहित 60 से अधिक किसानों ने प्रतिभाग किया। अंत में केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने सभी अतिथियों को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

गोष्ठी में शामिल किसान।

राष्ट्रीय
सहारा

नयों की जैविक खेती
ा के लिये लाभकारी

(एसएनबी)। चंद्रशेखर आजाद प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि ने कृषकों को रसायनमुक्त सब्जी के लिये जागरूक करते हुए इसके जरूरी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि की जैविक खेती, स्वाद और सेहत के किसानों की आय की दृष्टि से भी है।

कों को एक दिवसीय प्रशिक्षण में किसानों को सब्जियों की जैविक बारे में बताया गया। यहां कृषकों को करते हुए कृषि वैज्ञानिक डॉ. खलील बताया कि आधुनिक कृषि के तहत क उर्वरकों के असंतुलित प्रयोग और ादों के नगण्य उपयोग के चलते भूमि त्वों की कमी होती जा रही है। जिससे फसलों की पैदावार में भी गिरावट हो न्होंने कहा कि सब्जी उत्पादन में यह भीर रूप धारण करती जा रही है। नमें फसलों की अपेक्षा रासायनिक और पौध संरक्षण व वृद्धि नियंत्रक

सूचकांक
59,808.97 +899.62

शनिवार
कानपुर, 4 मार्च 2023
वर्ष 66 अंक 62
आर.एन.आई. नं. 6984/58
रजि. निस-2/CPM/03/KPHO/2013-14
मूल्य 2 रूपया पृष्ठ 8

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आर्थिक दैनिक
व्यापारसंदेश

e-paper: www.vyaparsandesh.com

किसान गोष्ठी का हुआ आयोजन

कानपुर, 3 मार्च (निस)। सीएसए द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर द्वारा ग्राम, गजा निवादा,विकासखंड मैथा में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि चंद्र प्रकाश मिश्रा ने कहा कि किसान भाई फसलों के अवशेषों को आग लगाने न लगाएं क्योंकि आग लगाने से मिट्टी में नमी की कमी एवं मृदा तापमान में बढ़ोतरी होती है।जिससे खेत की उर्वरा शक्ति कम होने के साथ-साथ मृदा की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत प्रभाव पड़ता है साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से होने वाले दुष्परिणामों का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ रहा है। मिश्रा ने कृषकों से फसल अवशेषों में आग न लगाने की अपील की और कहा कि इसे खेतों में सड़ाकर खाद बनाएं जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति पड़ेगी। केंद्र की गृह वैज्ञानिक डॉ. निमिषा अवस्थी ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि किसान साथियों फसल में अवशेषों का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं। जिससे विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं उन्होंने कहा फसल के अवशेषों पर मशरूम की गुणवत्ता युक्त खेती की जा सकती है। केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने कहा कि किसान भाई अपनी फसल की सुरक्षा हेतु अपने घर पर ही नीमास्त्र व दशपर्णी का निर्माण करें तथा फसल अवशेषों को मल्चिंग के रूप में प्रयोग करें। फसल अवशेष प्रबंधन योजना के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि रोटावेटर, सुपर सीडर,हैप्पी सीडर तथा मलचर आदि कृषि यंत्रों के प्रयोग से फसल अवशेषों को खेतों में दवा देने से गेहूं की फसल अच्छी होती है। इस अवसर पर खेत में किसानों को गेहूं की फसल भी दिखाई गई, सभी किसान गेहूं फसल देखकर सहमत हुए कि अब वे फसल अवशेषों में आग नहीं लगाएंगे, इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम के प्रगतिशील किसान आनंद स्वरूप दुबे ने की। इस कार्यक्रम में ग्राम के प्रगतिसील किसान रामआसरे,अनुज कुमार रघुराज सिंह एवं राघवजी सहित 60 से अधिक किसानों ने प्रतिभाग किया। अंत में केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने सभी अतिथियों को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

वर्ष 17 अंक 62 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, शनिवार 04 मार्च 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक नगर छाया

RNI N.UPHIN/2007/27090

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com

7 आस्ट्रेलिया ने नौ विकेट से जीता तीसरा टेस्ट मैच

प्रक्षेत्र दिवस व किसान गोष्ठी का हुआ आयोजन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर द्वारा आज ग्राम, गजा निवादा,विकासखंड मैथा में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि चंद्र प्रकाश मिश्रा ने कहा कि किसान भाई फसलों के अवशेषों को आग लगाने न लगाएं क्योंकि आग लगाने से मिट्टी में नमी की कमी एवं मृदा तापमान में बढ़ोतरी होती है जिससे खेत की उर्वरा शक्ति कम होने के साथ-साथ मृदा की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत प्रभाव पड़ता है साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से होने वाले दुष्परिणामों का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ रहा है। मिश्रा ने कृषकों से फसल अवशेषों में आग न लगाने की अपील की और कहा कि इसे खेतों में सड़ाकर खाद बनाएं जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति पड़ेगी। केंद्र की गृह वैज्ञानिक डॉ. निमिषा अवस्थी ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि किसान साथियों फसल में अवशेषों का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं। जिससे विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं उन्होंने कहा फसल के अवशेषों पर मशरूम की गुणवत्ता युक्त खेती की जा सकती है। केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने कहा कि किसान भाई अपनी फसल की सुरक्षा हेतु अपने घर पर ही नीमास्त्र व दशपर्णी का निर्माण करें तथा फसल अवशेषों को मल्चिंग के रूप में प्रयोग करें। फसल अवशेष प्रबंधन योजना के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि रोटावेटर, सुपर सीडर,हैप्पी सीडर तथा मलचर आदि कृषि यंत्रों के प्रयोग से फसल अवशेषों को खेतों में दवा देने से गेहूं की फसल अच्छी होती है। इस अवसर पर खेत में किसानों को गेहूं की फसल भी दिखाई गई, सभी किसान गेहूं फसल देखकर सहमत हुए कि अब वे फसल अवशेषों में आग नहीं लगाएंगे, इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम के प्रगतिशील किसान आनंद स्वरूप दुबे जी ने की। इस कार्यक्रम में ग्राम के प्रगतिसील किसान रामआसरे,अनुज कुमार रघुराज सिंह एवं राघवजी सहित 60 से अधिक किसानों ने प्रतिभाग किया। अंत में केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने सभी अतिथियों को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

वर्ष 17 अंक 62 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, शनिवार 04 मार्च 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक नगर छाया

RNI N.UPHIN/2007/27090

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com

7 आस्ट्रेलिया ने नौ विकेट से जीता तीसरा टेस्ट मैच

प्रक्षेत्र दिवस व किसान गोष्ठी का हुआ आयोजन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर द्वारा आज ग्राम, गजा निवादा,विकासखंड मैथा में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि चंद्र प्रकाश मिश्रा ने कहा कि किसान भाई फसलों के अवशेषों को आग लगाने न लगाएं क्योंकि आग लगाने से मिट्टी में नमी की कमी एवं मृदा तापमान में बढ़ोतरी होती है जिससे खेत की उर्वरा शक्ति कम होने के साथ-साथ मृदा की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत प्रभाव पड़ता है साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से होने वाले दुष्परिणामों का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ रहा है। मिश्रा ने कृषकों से फसल अवशेषों में आग न लगाने की अपील की और कहा कि इसे खेतों में सड़ाकर खाद बनाएं जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति पड़ेगी। केंद्र की गृह वैज्ञानिक डॉ. निमिषा अवस्थी ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि किसान साथियों फसल में अवशेषों का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं। जिससे विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं उन्होंने कहा फसल के अवशेषों पर मशरूम की गुणवत्ता युक्त खेती की जा सकती है। केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने कहा कि किसान भाई अपनी फसल की सुरक्षा हेतु अपने घर पर ही नीमास्त्र व दशपर्णी का निर्माण करें तथा फसल अवशेषों को मल्चिंग के रूप में प्रयोग करें। फसल अवशेष प्रबंधन योजना के नोडल अधिकारी डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि रोटावेटर, सुपर सीडर,हैप्पी सीडर तथा मलचर आदि कृषि यंत्रों के प्रयोग से फसल अवशेषों को खेतों में दवा देने से गेहूं की फसल अच्छी होती है। इस अवसर पर खेत में किसानों को गेहूं की फसल भी दिखाई गई, सभी किसान गेहूं फसल देखकर सहमत हुए कि अब वे फसल अवशेषों में आग नहीं लगाएंगे, इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने किसानों को संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम के प्रगतिशील किसान आनंद स्वरूप दुबे जी ने की। इस कार्यक्रम में ग्राम के प्रगतिसील किसान रामआसरे,अनुज कुमार रघुराज सिंह एवं राघवजी सहित 60 से अधिक किसानों ने प्रतिभाग किया। अंत में केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने सभी अतिथियों को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।